पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
1	**3000 ई॰ पू॰ से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन**	1

संक्षिप्त भूमिका

- **सिन्धुघाटी सभ्यता** (2500 ई॰ पू॰ से 1750 ई॰ पू॰) से **मौर्य वंशावली** (तीसरी सदी ईस्वी) तक हम कला एवं हस्तकला की धीरे-धीरे प्रगति होती हुई देखते हैं।
- **हड़प्पन युग** के कलाकार उच्च कोटि के थे।
- **अशोक युग** में कला के उच्च स्तरीय नमूने के स्तम्भ भारतीय कला की धरोहर हैं।
- इसी युग में मध्य प्रदेश में स्थित **सांची** के **विशाल स्तूप** व **मूर्तिकला** के उदाहरण देखने को मिलते हैं।
- भारतीय कला के इतिहास में **गुप्तकालीन युग** को **स्वर्ण युग** माना जाता है।
- **मथुरा, सारनाथ, उज्जैन, अहिछत्र** तथा कुछ अन्य नगर इस युग में कला के मुख्य केन्द्रों के रूप में जाने जाते थे।
- धार्मिक मूर्तिकला में **दैवीय गुण** देखने को मिलते हैं।
- इसी युग में **अजंता** के प्रसिद्ध चित्र बनाये गए थे।
- इस काल में गुफा तथा मन्दिर वास्तुकला के अंतर्गत मध्य प्रदेश की **उदयगिरि गुफायें** तथा **नाचना** व **भूमरा** के मन्दिर उल्लेखनीय हैं।

1.1

नृत्यांगना

विवरण

शीर्षक : नृत्य करती हुई लड़की

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : कांस्य

स्थान : मोहनजो-दाड़ो

काल : हड़प्पन काल (2500 ई॰ पू॰)

आकार : लगभग 4 इंच

संकलन : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

मूर्ति की विशेषतायें

- प्रस्तुत मूर्ति कांस्य की बनी है।
- यह सिन्धु घाटी के कलाकारों की कलात्मकता और तकनीकी कौशल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- यह मूर्ति देखने में काफी पतली एवं लंबी तथा इसमें एक लयात्मकता है।
- इसे निर्वस्त्र दिखाया गया है। साथ ही इसके बायें हाथ में लगभग कंधों तक चूड़ियां पहनी हुई दिखाई गई हैं ठीक उसी तरह जैसे हम गुजरात और राजस्थान के क्षेत्रों में आजकल के आदिवासी लोगों को देखते हैं।
- यह अपनी कमर पर दायां हाथ रखकर तथा बायां हाथ अपनी बायीं जांघ पर रखे हुए आराम की अवस्था में खड़ी है, साथ ही जूड़े के तौर पर उसके बाल बांधे गए हैं।
- इसकी ऊंचाई केवल 4 इंच के लगभग है।

इस मूर्ति के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- नृत्यांगना की मूर्ति में कलाकार द्वारा कलात्मक विशेषताओं व कारीगरी का मिश्रण बहुत ही कुशलता से किया गया है।
- इस मूर्ति को ढालने में उस युग के कलाकारों की धातु पर कलाकृति बनाने के गुण स्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं।
- नृत्यांगना में धातु पर ढालने की कला-कौशल का उच्च स्तरीय प्रदर्शन हुआ है।

स्व-मूल्यांकन

1.1.1 'नृत्यांगना' मूर्ति में प्रयुक्त माध्यम का नाम बताइए।

1.1.2 मूर्ति की ऊंचाई का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

1.1.1 कांस्य

1.1.2 लगभग 4 इंच

1.2

रामपुरवा बुल कैपिटल

विवरण

शीर्षक : रामपुरवा बुल कैपिटल

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : पॉलिश किया हुआ बलुआ पत्थर (सैंड स्टोन)

स्थान : रामपुरवा

काल : मौर्य काल (ई॰ पू॰ तीसरी सदी)

आकार : लगभग 7 फीट

संकलन : भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

मूर्ति की विशेषतायें

- अशोक के काल में जितने भी शीर्ष बने हैं, उनमें बुल कैपिटल सबसे प्रसिद्ध मूर्तियों में माना जाता है
- इसका नाम उसके उपलब्ध होने के स्थान रामपुरवा के आधार पर जाना जाता है।
- इसका आधार एक घंटी के आकार के उल्टे कमल से बना है, जिसके बाद शीर्ष पर एक राजकीय बैल है।
- शीर्षफलक के चारों ओर पेड़ पौधों के नमूने बने हैं।
- कमल तथा शीर्षफलक के ऊपर बैल की आकृति हावी होती दिखाई देती है।

इस मूर्तिकला के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- विद्वानों के अनुसार इस प्रकार की मूर्तिकला की प्रेरणा प्राथमिक मध्य-पूर्व अथवा ग्रीक शैली से प्राप्त हुई होगी।
- इस प्रकार की मूर्तिकला अत्यंत सूक्ष्म एवं विशुद्ध नक्काशी का उदहारण है।
- बैल पर की गई खुदाई स्पष्टत: भारतीय मूर्तिकारों की कला की उत्कृष्टता को दर्शाती है।
- बुल कैपिटल की निजी विशेषता उस पर की गई पॉलिश की चमक है।
- विद्वानों के मतानुसार अच्छी पॉलिश करने की योग्यता मध्यपूर्व के मूर्तिकारों से सीखी गई।

स्व-मूल्यांकन

1.2.1 बुल कैपिटल किस स्थान में पाया गया?

1.2.2 बुल कैपिटल का आधार क्या है?

1.2.3 बुल कैपिटल के शीर्षफलक पर क्या बना है?

उत्तर

1.2.1 रामपुरवा।

1.2.2 इस शीर्ष का आधार एक घण्टी के आकार के उलटे कमल से बना है

1.2.3 पेड़-पौधों के नमूने

1.3

अश्वेत राजकुमारी

विवरण

शीर्षक : अश्वेत राजकुमारी

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : भित्तिचित्र

स्थान : अजन्ता

काल : गुप्त-बाकाटक काल (दूसरी शताब्दी ई० से छठी शताब्दी ई०)

आकार : 20 फीट × 6 फीट (लगभग)

कलाकार : अज्ञात

चित्र की विशेषतायें

- अजन्ता चित्रों में **अश्वेत राजकुमारी** सर्वोत्तम कृतियों में से एक मानी जाती है।
- चित्र में संगीत की गीतात्मकता का अनुभव होता है।
- शरीर के अंगों की परिरेखाओं की कोमलता, गर्दन का सूक्ष्म झुकाव तथा सरलता इस चित्र को एक दिव्य विशेषता प्रदान करती है।
- जिन रंगों का प्रयोग किया गया है, वे अत्यंत सहज हैं तथा उनमें चटकीलेपन का अभाव है।

अजन्ता चित्रों के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- महाराष्ट्र में औरंगाबाद जिले के निकट अजन्ता गुफायें हैं, जहाँ ये चित्र बनें।
- इन गुफाओं की संख्या 30 है, जिनका उपयोग चैत्यों (पूजा के स्थान) तथा विहारों (मठों) के रूप में होता था।
- अजन्ता की कलाकृतियां दो चरणों में पूरी हुईं-हीनयान तथा महायान।
- अजन्ता चित्रों में टैम्परा पद्धति का प्रयोग किया गया है।
- इन चित्रों के विषय धार्मिक होने के साथ ही कल्पनात्मक भी हैं।

स्व-मूल्यांकन

1.3.1 अधिकांश अजंता चित्र किस युग में बने, बताइए।

1.3.2 अजंता चित्र किन चरणों में बनें, बताइए।

1.3.3 अश्वेत राजकुमारी में किस प्रकार के रंगों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर

1.3.1 गुप्त-बाकाटक काल (दूसरी शताब्दी ई॰ से छठी शताब्दी ई॰)।

1.3.2 हीनयान तथा महायान।

1.3.3 अत्यंत सहज रंग, जिनमें चटकीलेपन का अभाव है।

क्या आप जानते हैं?

- सिंधुघाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल मोहनजो-दाड़ो तथा हड़प्पा हैं।
- यद्यपि नृत्यांगना की ऊंचाई केवल 4 इंच है, वह देखने में बड़ी प्रतीत होती है।
- अच्छी पॉलिश करने का कौशल मौर्य युग के मूर्तिकारों ने मध्य-पूर्व के मूर्तिकारों से सीखा था।
- हड़प्पन काल के कलाकार अत्यंत कुशल थे।